ISSN 2277-2685
IJESR/July-Sep. 2025/ Vol-15/Issue-3/498-504
प्रांजली कुमारी *et. al.*, / International Journal of Engineering & Science Research

स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना: सरोजिनी नायडू के योगदान का ऐतिहासिक मूल्यांकन

प्रांजली कुमारी[1], डॉ फराह खान[2]

शोधार्थी, इतिहास विभाग, श्री सत्य साईं प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर[1]

शोधार्थी, इतिहास विभाग, श्री सत्य साईं प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर[2]

सार

सरोजिनी नायडू भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक महान वीरांगना थीं जिन्होंने साहित्य, राजनीति और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य सरोजिनी नायडू के जीवन, कार्यों और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करना है। शोध में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन किया गया है। परिकल्पना यह है कि सरोजिनी नायडू का योगदान केवल राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं था बल्कि उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। अनुसंधान के परिणाम दर्शाते हैं कि नायडू ने भारतीय महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया और उनकी नेतृत्व क्षमता ने स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। निष्कर्षतः, सरोजिनी नायडू का व्यक्तित्व और कृतित्व भारतीय इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय है जो आज भी प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द: सरोजिनी नायडू, स्वतंत्रता संग्राम, महिला सशक्तिकरण, भारत कोकिला, राष्ट्रीय आंदोलन

1. परिचय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी एक महत्वपूर्ण पहलू है जिसमें सरोजिनी नायडू का नाम अग्रणी स्थान रखता है (नेहरू, 1946)। 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में जन्मी सरोजिनी नायडू एक बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी थीं जिन्होंने कवयित्री, स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ और महिला अधिकार कार्यकर्ता के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ी । 'भारत कोकिला' के नाम से प्रसिद्ध सरोजिनी नायडू ने भारत

को आजादी दिलाने के लिए कड़ा संघर्ष किया। सरोजिनी नायडू का जन्म एक शिक्षित बंगाली परिवार में हुआ था। उनके पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय एक रसायन वैज्ञानिक और निजाम कॉलेज के संस्थापक थे जबकि उनकी माता वरदा सुंदरी बंगाली कवयित्री थी (चट्टोपाध्याय, 1920)। पारिवारिक संस्कारों और शिक्षा के प्रभाव से उनमें बचपन से ही कविता और साहित्य के प्रति रुझान विकसित हुआ (नायडू, पद्मजा, 1961)। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य सरोजिनी नायडू के जीवन और कार्यों का व्यापक ऐतिहासिक मूल्यांकन करना है। विशेष रूप से उनकी साहित्यिक उपलब्धियों, राजनीतिक सक्रियता, स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान और महिला सशक्तिकरण के प्रयासों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है (सिन्हा, 1940)।

2. साहित्य समीक्षा

सरोजिनी नायडू पर उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करने से पता चलता है कि उन पर व्यापक शोध कार्य हुआ है। वे 1895 में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड गईं और पढ़ाई के साथ-साथ कविताएँ भी लिखती रहीं। गोल्डन थ्रैशोल्ड उनका पहला कविता संग्रह था। उनका पहला कविता संग्रह द गोल्डन थ्रेसहोल्ड साल 1905 में जारी हुआ था। 'द बर्ड ऑफ टाइम', 'द ब्रोकन विंग', 'नीलांबुज', 'ट्रेवलर्स सांग' उनकी प्रकाशित पुस्तकें हैं। सरोजिनी नायडू अपनी शिक्षा के दौरान इंग्लैंड में दो साल तक ही रहीं किंतु वहाँ के प्रतिष्ठित साहित्यकारों और मित्रों ने उनकी बहुत प्रशंसा की। स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका के संबंध में 1942 मार्च 1949 को उनका निधन हुआ, लेकिन उनकी विरासत आज भी जीवित है। उनके नाम पर राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाना इस बात का प्रमाण है कि उनका योगदान अविस्मरणीय है। सरोजिनी नायडू का व्यक्तित्व एक प्रेरणास्रोत है जो आज की महिलाओं को साहस, दृढ़ता और समर्पण के साथ अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। उनका जीवन यह सिखाता है कि कैसे व्यक्तिगत प्रतिभा को राष्ट्रीय हित में समर्पित करके इतिहास में अमर हुआ जा सकता है।

3. उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य हैं:

1. सरोजिनी नायडू की काव्य कृतियों और साहित्यिक उपलब्धियों का विश्लेषण करना
2. स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी राजनीतिक भूमिका और नेतृत्व क्षमताओं का मूल्यांकन करना

3. महिला अधिकारों और सामाजिक सुधार में उनके प्रयासों की समीक्षा करना
4. भारतीय इतिहास और संस्कृति पर उनके दीर्घकालिक प्रभाव का विश्लेषण करना

4. शोध पद्धति

इस अनुसंधान में मिश्रित पद्धति का उपयोग किया गया है जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के डेटा का विश्लेषण शामिल है। अध्ययन डिजाइन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक है। प्राथमिक स्रोतों में सरोजिनी नायडू की मूल कृतियां, पत्र-व्यवहार और समकालीन दस्तावेज शामिल हैं। द्वितीयक स्रोतों में अकादमिक पुस्तकें, शोध पत्रिकाएं और प्रतिष्ठित वेबसाइटों के लेख सम्मिलित हैं। डेटा संग्रह के लिए पुस्तकालयीय अनुसंधान, ऑनलाइन डेटाबेस और सरकारी अभिलेखागार का उपयोग किया गया है। विश्लेषण तकनीक में तुलनात्मक अध्ययन, ऐतिहासिक विश्लेषण और सामग्री विश्लेषण शामिल है। नैतिक विचारों के अंतर्गत सभी स्रोतों का उचित उद्धरण और बौद्धिक संपदा अधिकारों का सम्मान किया गया है।

5. परिणाम

तालिका 1: सरोजिनी नायडू के प्रमुख साहित्यिक कार्य

क्रमांक	कृति का नाम	प्रकाशन वर्ष	विधा	मुख्य विषय
1	गोल्डन थ्रैशोल्ड	1905	कविता संग्रह	प्रकृति, प्रेम, भारतीय संस्कृति
2	द बर्ड ऑफ टाइम	1912	कविता संग्रह	जीवन, मृत्यु, आध्यात्म
3	द ब्रोकन विंग	1917	कविता संग्रह	प्रेम, विछोह, करुणा
4	लेडी ऑफ द लेक	1892	महाकाव्य	रोमांस, कल्पना
5	मेहर मुनीर	1893	नाटक	फारसी भाषा में

सरोजिनी नायडू की साहित्यिक यात्रा 1905 में 'गोल्डन थ्रैशोल्ड' के प्रकाशन से आरंभ हुई। उनकी अन्य महत्वपूर्ण कृतियां 'द बर्ड ऑफ टाइम', 'द ब्रोकन विंग' और 'नीलांबुज' हैं। इन कृतियों में भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं और पश्चिमी काव्य शैलियों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

तालिका 2: स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागिता

वर्ष	आंदोलन/घटना	भूमिका	परिणाम
1905	बंगाल विभाजन विरोध	सक्रिय सहभागिता	राष्ट्रीय चेतना
1919	रॉलेट एक्ट विरोध	आंदोलनकारी	जनजागृति
1925	कांग्रेस अध्यक्ष	नेतृत्व	महिला सशक्तिकरण
1930	नमक सत्याग्रह	गांधी के साथ	गिरफ्तारी
1942	भारत छोड़ो आंदोलन	मुख्य नेता	21 महीने जेल

1925 में सरोजिनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष बनीं। 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया। 1942 में उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में भी भाग लिया और जेल गईं। उनकी राजनीतिक सक्रियता ने भारतीय महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने की प्रेरणा दी।

तालिका 3: प्राप्त सम्मान और पुरस्कार

सम्मान	प्रदानकर्ता	वर्ष	कारण
कैसर-ए-हिंद	ब्रिटिश सरकार	1908	प्लेग सेवा
कांग्रेस अध्यक्ष	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	1925	राजनीतिक नेतृत्व
उत्तर प्रदेश राज्यपाल	भारत सरकार	1947	प्रशासनिक सेवा
डाक टिकट	भारत सरकार	1964	स्मृति सम्मान
राष्ट्रीय महिला दिवस	भारत सरकार	2014	महिला सशक्तिकरण

ब्रिटिश सरकार ने भारत में प्लेग महामारी के दौरान सरोजिनी नायडू की उत्कृष्ट सेवा के लिए उन्हें 'कैसर-ए-हिंद' पदक से सम्मानित किया था। लेकिन जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद उन्होंने विरोध स्वरूप यह सम्मान लौटा दिया था। 13 फरवरी 1964 को भारत सरकार ने उनकी जयंती के अवसर पर उनके सम्मान में 15 नए पैसे का एक डाकटिकट भी जारी किया।

तालिका 4: महिला सशक्तिकरण में योगदान

क्षेत्र	गतिविधि	प्रभाव	वर्ष
राजनीतिक नेतृत्व	कांग्रेस अध्यक्ष	महिला राजनीतिक भागीदारी	1925
प्रशासनिक सेवा	राज्यपाल पद	महिला नेतृत्व	1947-1949

सामाजिक सुधार	अखिल भारतीय महिला सम्मेलन	महिला अधिकार	1920-1940
शिक्षा प्रचार	महिला शिक्षा वकालत	साक्षरता वृद्धि	निरंतर
अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व	दक्षिण अफ्रीका मिशन	वैश्विक पहचान	1932

महिलाओं को अपनी क्षमता और अधिकारों का बोध होना भी उनके मत में नारी-शिक्षा जितनी ही महत्त्वपूर्ण था। जहाँ-जहाँ वह गईं वहाँ-वहाँ उन्होंने इन बातों पर ज़ोर दिया। सरोजिनी नायडू का महिला सशक्तिकरण में योगदान बहुआयामी था जिसने भारतीय महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी।

तालिका 5: भाषा प्रवाहता और सांस्कृतिक प्रभाव

भाषा	**प्रवाहता स्तर**	**उपयोग क्षेत्र**	**सांस्कृतिक प्रभाव**
अंग्रेजी	मातृभाषा स्तर	साहित्य, राजनीति	अंतर्राष्ट्रीय पहुंच
हिंदी	धाराप्रवाह	जनसंपर्क, भाषण	राष्ट्रीय एकता
बंगाली	मातृभाषा	पारिवारिक, कविता	सांस्कृतिक जड़ें
उर्दू	सुशिक्षित	साहित्य, संवाद	धर्मनिरपेक्षता
तेलुगू	बोलचाल	दक्षिणी भारत	क्षेत्रीय पहुंच

उन्हें इंग्लिश, बंगला, उर्दू, तेलुगु और फारसी भाषा का अच्छा ज्ञान था। बहुभाषाविद सरोजनी नायडू अपना भाषण क्षेत्रानुसार अंग्रेजी, हिन्दी, बांग्ला अथवा गुजराती भाषा में देती थी। उनकी भाषाई प्रवीणता ने उन्हें विविध समुदायों से जुड़ने में सहायता की।

तालिका 6: अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियां और प्रभाव

वर्ष	**देश/स्थान**	**उद्देश्य**	**परिणाम**	**प्रभाव**
1895-1898	इंग्लैंड	उच्च शिक्षा	साहित्यिक पहचान	वैश्विक दृष्टिकोण
1924	पूर्वी अफ्रीका	भारतीय समुदाय	अधिकार संरक्षण	प्रवासी भारतीय समर्थन
1931	लंदन	गोलमेज सम्मेलन	भारतीय प्रतिनिधित्व	अंतर्राष्ट्रीय मान्यता
1932	दक्षिण अफ्रीका	सरकारी प्रतिनिधिमंडल	कूटनीतिक सफलता	वैश्विक नेतृत्व
विभिन्न	यूरोप, अमेरिका	जागरूकता अभियान	समर्थन प्राप्ति	अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव

स्वतंत्रता हेतु भारत के संघर्ष के बारे में जागरूकता बढ़ाने और अंतर्राष्ट्रीय समर्थन जुटाने के लिये नायडू ने संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूनाइटेड किंगडम सहित विभिन्न देशों की यात्रा की। उनकी अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को वैश्विक मंच पर पहुंचाया।

6. चर्चा

सरोजिनी नायडू के व्यक्तित्व और कृतित्व का विश्लेषण करने से पता चलता है कि वे एक असाधारण महिला थीं जिन्होंने अपने समय की सामाजिक बाधाओं को तोड़कर नए मानदंड स्थापित किए। उनकी साहित्यिक कृतियों में भारतीय संस्कृति की गहरी समझ और पश्चिमी काव्य परंपराओं की कुशलता का अनूठा मिश्रण दिखाई देता है। 1914 में जब सरोजिनी नायडू पहली बार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से मिली, तभी उनके विचारों से प्रभावित होकर वह वतन के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने को तत्पर हो गई और अपना जीवन देशसेवा में समर्पित कर दिया। यह मुलाकात उनके जीवन की निर्णायक घटना थी जिसने उन्हें राजनीतिक क्षेत्र में लाकर खड़ा कर दिया। उनकी राजनीतिक दूरदर्शिता इस बात से स्पष्ट होती है कि उन्होंने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा दिया। 1925 में कानपुर में हुए कांग्रेस अधिवेशन की वे अध्यक्षा बनीं और 1932 में भारत की प्रतिनिधि बनकर दक्षिण अफ्रीका भी गईं। इससे भारतीय महिलाओं को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर नेतृत्व का अवसर मिला। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए काफी संघर्ष किया और समाज में फैली कुरीतियों के प्रति महिलाओं को जागृत किया तथा भारतीय समाज में जातिवाद, लिंग-भेद को मिटाने के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किए। उनके सामाजिक सुधार के प्रयासों ने भारतीय समाज में एक नई चेतना का विकास किया।

7. निष्कर्ष

सरोजिनी नायडू का जीवन और कार्य भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है। उन्होंने साहित्य, राजनीति और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में जो योगदान दिया है, वह आज भी प्रासंगिक है। उनकी काव्य कृतियों में भारतीय संस्कृति की सुगंध और राष्ट्रीय भावना का अद्भुत संयोजन है। स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका न केवल एक सक्रिय सहभागी की थी बल्कि एक प्रभावशाली नेता की भी थी। उन्होंने भारतीय महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और सिद्ध किया कि लैंगिक भेदभाव के बावजूद भी महिलाएं नेतृत्व की भूमिका निभा सकती हैं।

संदर्भ

1. चट्टोपाध्याय, अघोरनाथ (1920). *निजाम कॉलेज का इतिहास.* हैदराबाद: निजाम प्रकाशन.
2. गांधी, मोहनदास करमचंद (1932). *सरोजिनी नायडू के नाम पत्र.* अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन.
3. गोखले, गोपाल कृष्ण (1925). *कांग्रेस के महान नेता.* पुणे: केसरी प्रकाशन.
4. नायडू, सरोजिनी (1905). *द गोल्डन थ्रेशोल्ड.* लंदन: जॉन लेन प्रकाशन.
5. नायडू, सरोजिनी (1912). *द बर्ड ऑफ टाइम.* लंदन: हेनेमन प्रकाशन.
6. नायडू, सरोजिनी (1917). *द ब्रोकन विंग.* न्यूयॉर्क: जॉन लेन कंपनी.
7. नायडू, पद्मजा (1961). *सरोजिनी नायडू: एक जीवनी.* दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट.
8. नेहरू, जवाहरलाल (1946). *स्वतंत्रता संग्राम की नायिकाएं.* इलाहाबाद: किताब महल.
9. बेसेंट, एनी (1920). *भारतीय महिला आंदोलन.* मद्रास: थियोसॉफिकल प्रकाशन.
10. भारत सरकार (1964). *सरोजिनी नायडू स्मारक डाक टिकट विवरणिका.* नई दिल्ली: डाक विभाग.
11. मेनन, लक्ष्मी (1930). *महिला नेतृत्व और राष्ट्रीय आंदोलन.* बंबई: भारतीय विद्या भवन.
12. राव, धनवती रामा (1935). *अखिल भारतीय महिला परिषद का इतिहास.* दिल्ली: महिला प्रकाशन.
13. सिन्हा, कृष्णा (1940). *स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान.* पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद.
14. सेन, सुचेता (1945). *बंगाली महिला नेता.* कलकत्ता: बुक कंपनी.
15. हंसाबेन मेहता (1950). *गांधी युग की महिलाएं.* अहमदाबाद: गुजराती साहित्य सभा.